IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मृणाल पाण्डे के निबन्धों में स्त्री.वेदना

दिलीप कुमार

शोध छात्र

विभाग.हिन्दी विभाग

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदाए वड़ोदरा ;गुजरातद्ध

मृणाल पांडे के निबंधों में स्त्री के जीवन का संसार दिखाई देता है। युगों.युगों से स्त्री अपने अधिकारों एवं अस्मिता के लिए संघर्ष करती आई है। जीवन के मूल्यबोध तथा अपने अस्तित्व के लिए स्त्री लड़ती रही है। स्त्री का जीवन मानव समाज की सच्चाइयों की पोल खोलता है तथा स्त्री के प्रति किए गए बर्तावों का खाका भी प्रस्तुत करता है। मृणाल पांडे ने अपने निबंधों के माध्यम से स्त्री के जीवन के अनकही कथा को कहा है। स्त्री की वेदना को महत्व दिया है। जैसे.जैसे हम उनके निबंधों को पढ़ते हैं स्त्री वेदना की परतें खुलती जाती हैं। इन परत्तों में जीवन की बड़ी.बड़ी सच्चाइयां छुपी हुई हैं जिसे देख कर भी यह समाज नहीं देखना चाहता है। क्या स्त्री का संसार दुःख की इन्ही गहराइयों में ही छुपा है६ वह अपने अस्तित्व की लड़ाई कितने युगों से लड़ती आ रही है६ इन सभी भावबोधो का मूल्यांकन लेखिका ने अपने निबंधों में किया है। इनके निबंधों में स्त्री जीवन के कई मुद्दे दिखाई देते हैं जैसे.स्त्री की गरीबीए स्त्री की असमानताए लोकतंत्र में स्त्री की दशाए शरणार्थी महिलाओं की समस्याए समाज में बढ़ रहे नारियों के प्रति अपराध आदि। इन सभी मुद्दों पर बात करते हुए मृणाल पांडे कहती हैं कि.ष्इसमें कोई शक नहीं कि हमारे समय में तमाम और जटिल मानवीय मुद्दों की तरह नारीवाद का सवाल भी काफी उलझा हुआ है। यह भी सच है कि कभी कुछ मायनों में नारीवाद की स्थापनाएँ मूल कथ्य से विच्छिन्न करके निजी स्वार्थ को पोसने के लिए धड़ाधड़ इस्तेमाल की जा रही हैं। इसी तरह कभी.कभी शासन.तले नारी गरिमा के कथित दमन या विनाश पर घड़ियाली आँसू बहाए जा रहे होए तो नारीवाद हमें मुख्यधारा की भ्रष्ट राजनीति का और भी भ्रष्ट स्वांग.सा प्रतीत होने लगता है।ष१

हमारे आज के उपभोक्तावादी समाज की लालच भरी नैतिकता हमारे समाज की उस सामंती व्यवस्था से जुड़ गई है जिसके तहत विवाह के बाद एक बहू को अपने ससुराल में हर किस्म की अमानवीय परिस्थिति से तालमेल बैठाना पड़ता है और समर्पित होकर सब कुछ सहन करना पड़ता है। स्त्रियों के लिए आज कानून जरूर बने हैं मगर उन कानूनों का पालन स्त्री के पक्ष में नहीं हो रहा है। कानून की धज्जियां उड़ाई जा रही हैं। आने वाले समय में यह कानून स्त्रियों के लिए कितने कारगर साबित होंगे६ यह अंदाज लगाना थोड़ा मुश्किल है। स्त्री चिंतन की इस कड़ी पर विचार करते हुए मृणाल पांडे अपने निबंध श्परिधि पर स्त्रीश में कहतीं हैं कि.ष्यह बात भी याद रखने की है कि अगले चरण तक पहुंचने के लिए हमारी महिलाओं की निजी सांगठनिक क्षमता बढ़नी जरूरी बनती है और अभी यह वैसी मजबूत नहीं हो पाई है जैसे कि होनी है। परिवारों की तरह राजनीति में भी बुनियादी निर्णयों के लिए आज भी अंततः महिलाएं प्रमुखापेक्षी होकर उन्हीं नेताओं की कृपा दृष्टि पर निर्भर होने को मजबूर है जिनके सामंती पुरुष तेवर पुरुषों की सांगठनिक ताकत में स्त्रियों द्वारा किसी किस्म की सार्थक भागीदारी के खिलाफ रहे हैं। अतः यदि स्त्रियां सचमुच लोकतंत्र की सार्थक शक्ति बनना चाहती हैंए तो अब समय आ गया है कि लोकतंत्र में स्थायित्व तौर पारदर्शिता चाहने वाले सभी संगठनों तथा चुनाव आयोग के साथ मिलकर राजनीति की ऊर्जा को सही उम्मीदवारों तथा साफ.सुथरे संगठनों की मार्फ़त लगातार एक ऐसी ताकत में तब्दील करने में जुट जाएं जिसके मूल में सच्चे सहकार की भावना होए वहशी सत्ता लोलुपता नही।ष्२

स्त्री जीवन की कड़ियाँ खोलते हुए भी मृणाल पाण्डे ने अपने निबंधों में अपने अनुभव साझा किए हैं। आज स्त्रियाँ समाज का हिस्सा ही नही बल्कि आधी आबादी हैंए फिर भी उनके अधिकारों की कम बात होती है। स्त्री का संसार कहीं से भी सूना नहीं है, वह पूरा भरा हुआ परिवार है। स्त्री में समर्पण की भावना होती है। घर, परिवार, समाज के लिए वह अपना जीवन बलिदान कर देती है। स्त्री अब रीतिकालीन समाज की नारी नही वरन वह महाशक्ति की अनुगामिनी है। दृढ़ताए साहसएममताए करुणाए शीलएउदारता क्या नही है उसके पास६ वह कमजोर नही एयहां तक कि राष्ट्रीय आंदोलन से लेकर साहित्यिकए राजनीतिकए धार्मिक आंदोलन की बागडोर उसके हाथ मे थी। बदलते दौर में स्त्री जीवन का जो हाहाकार सुनाई देता है वह निश्चित ही संपूर्ण मानव समाज को सोचने पर विवश करता है। अपने ही घर परिवार में स्त्रियां इस तरह जलाई जा रहीए सताई जा रही हैं।स्त्री को कमजोर समझकर इसी समाज में रहने वाले लोग उनके साथ पशुवत व्यवहार करते हैं यह चिंतन का विषय है।

स्त्री के वर्तमान जीवन की विडंबना एवं विवशता पर बात करते हुए महादेवी वर्मा कहतीं हैं कि.ष्वर्तमान समाज जिस स्त्री को निर्वासन.दंड देना चाहता हैए उसके फूटे कपाल को ऐसे लोहे से दाग देता है जिसका चिन्ह जन्म.जन्मांतर के आशुओं से भी नहीं धुल पाता। किसी दिशा में भी न वह और न उसकी तिरस्कृत संतति इस कलंक कालिमा से छुटकारा पाने की आशा कर सकते हैं। उसे मूक भाव से युग.युगान्तर तक इस दण्ड का ;जिसे पाने के लिए उसने कोई अपराध नही कियाद्ध भोग करते हुए समाज के उच्छ्रृंखल व्यक्तियों की सीमातीत विलास.वासना का बाँध बनकर जीवित रहना पड़ता है।

उसके लिए कोई दूसरी गति नहीए कोई दूसरा मार्ग नही और कोई दूसरा अवलम्ब नही। वह ऐसी ढालू राह पर निरवलम्ब छोड़ दी जाती हैए जहां से नीचे जाने के अतिरिक्त और कोई उपाय ही नही बनता।ष्३

मृणाल पांडे ने स्त्री जीवन के हर पहलू को टटोला है। तड़पतीए बेचैन स्त्रियों को अपनी आंखों से कराहते देखा है। उनके यहाँ स्त्री मनोदशा का काल्पनिक अंकन नहीं बल्कि राजनीतिज्ञोंए धर्मावलंबियोंए एवं सामाजिक संगठनों को एक रास्ता भी दिखाया है। कई प्रदेशों की घटनाओं को अपने निबंधों में साझा भी किया है। उनका मानना है कि यदि स्त्री को 21सदी के दौर में भी समस्त अधिकार नहीं मिलते और उसकी आकांक्षाएं पूर्ण नहीं होतीए वह अब भी घर की चहारदीवारी के अंदर कैद मूक बनी रहेगी तो आने वाला भविष्य उसके लिए और खतरनाक हो जाएगाए तब तो वह किसी के सामने अपनी बात भी नर रख सकेगी। समुचित स्वास्थ्य और शिक्षा आज स्त्री को कितना मिल रही है वह बखूबी जानती है६ शहर की अपेक्षा ग्रामीण स्त्रियों के पास समस्याएं ज्यादा हैं। शिक्षाए स्वास्थ्य की न समुचित व्यवस्था हैए न रोजगार की। उतने पर भी जीवन की उठापटक एवं स्त्री.पुरुष की असमानता का सवाल। असहायए कुंठितए एवं अशिक्षित स्त्रियों का एक बड़ा कुनबा उनके निबंधों में दिखाई देता है। इनकी मनोदशा को शासन सत्ता के लोग तथा समाज की वकालत करने वाले लोग कैसे समझ पाएंगे६

लेखिका ने अनुभव के आधार पर वंचित स्त्रियों का इतिहास कहने का पास किया है। स्त्रियों की समस्याएंए उनकी गरीबीए उनकी दयनीय स्थितिए की महागाथा को अपने जीवन के साथ जोड़कर लिखने का प्रयास कई बार विमर्शकारों को चौकाता भी है। समकालीन स्त्री के जीवन मूल्यबोध इनके यहाँ बड़ी सहजता के साथ दिखाई देते हैं। यह केवल स्त्री के मूल्य ही नहीं बल्कि रोई हुई आत्मकथा हैए जिसे पढ़करए जिसे सुनकर औरतों की स्थिति का अंदाजा लग जाता है। अपनी पुस्तक श्ओ उब्बीरीश् में मृणाल पाण्डे कहतीं हैं कि.ष्मैंने देखा कि समग्र दृष्टि के अभाव में किस तरह औरतों के सशक्तिकरण के लिए उठाए गए नेकनीयत सरकारी कदम भी कई बार आम स्त्री के मानवाधिकारों को कुचल सकते हैं कि अगर कोई गरीब स्त्री अनपढ़ होए पिछड़े इलाके के गांव या बड़े शहरों की किसी मलिन बस्ती में रहती हो और अंग्रेजी भाषा बोलने.समझने में महरूम हो तो राजसत्ता और उसके संवाहकों की नजर में वह एक दोयम दर्जे का जीव ही बनी रहती है। स्त्री सशक्तिकरण की पक्षधर जिस व्यवस्था का अंग है मैं स्वयं भी थीए अक्सर ऐसी स्त्री से कहती है कि अशिक्षित और गरीब होने के नाते वह अपनी क्षमता की बाबत सही चुनाव करने में असमर्थ हैए अतः राजसत्ता ही उसके लिए सही.गलत करेगी। इसके साथ ही मैने कई मामलों में यह भी देखा कि अगर स्वैच्छिक गर्भपात जैसा कोई मुद्दा नैतिक और राजनैतिक रूप से जटिल और बहुआयामी हो तो स्त्री का वर्गए जाति और आय उसकी छमता पर रोक लगाने को निर्णायक तौर से आड़े आ सकता है। नतीजतनए प्रजनन प्रक्रियाए जो पूरी स्त्री जाति के लिए उसकी एक बुनियादी और एक जैसी साझी स्मृतियों.अनुभवों का आगार होनी चाहिए.भारत में वर्ग और वर्ण विशेष की बुनियाद पर औरतों के अनुभवों को अलग.अलग रंग और आकार देती हे।ष्४

हमारे समाज में जीवन की जो भी समस्याएं हैं वे सभी स्त्रियों से जुड़ी हुई है। प्राचीनकाल से ही छोटी.छोटी बच्चियों के मन में यह बात बैठा दी जाती है कि पति परमेश्वर होता है। भले ही उसका पति लंपटए मूर्खए दुराचारी हो। उसकी सेवा और भक्ति की पत्नी का परम कर्तव्य है। स्त्री के जेहन में यह बात रखकर उनकी सेवा का लाभ लेकर पति के मन में उसके लिए दयाए सहानुभूति जैसे भाव या कृतज्ञता का भाव नहीं रहता है। समाज में स्त्री का उपेक्षित होना उसका स्त्री होना है और दूसरा धर्म.परंपराओं में बंधकर उसका पालन करना है। इन सबका फायदा केवल घर.परिवार ही नहीं पूरा समाज उठाता है। सामाजिक बेड़ियों में जकड़ी स्त्री घुट.घुट कर मरती रहती है। ऊपर से उसपर लाँछन भी लगाए जाते हैं। पुरुष वर्चस्व की चलते स्त्रियां सदियों से मानसिक और शारीरिक रूप से पीड़ित रही हैं और आज भी है। 21वीं सदी की बौद्धिकताए वैज्ञानिकताए टेक्नोलॉजी और तार्किकता के विकास के बावजूद भी पुरुष के भीतर छुपे स्त्री विरोधी रवैये को यह समाज छिपा नहीं पाता। इसके बावजूद भी स्त्री समाज में अपनी जगहए अपना अस्तित्व स्थापित करने की कोशिश की है। स्त्री के जीवन एवं दशा का मूल्यांकन करते हुए प्रसिद्ध लेखिका सिमोन द बाउवार कहती हैं कि.ष्हमें यह नहीं समझ लेना चाहिए कि केवल आर्थिक स्थिति बदलने से ही स्त्री की स्थिति में पूरा परिवर्तन आ जायेगा। यदि मानव विकास उसमें आर्थिक व्यवस्था का एक आधारभूत तत्व है। जो व्यक्ति का नियन्ता है। किंतु इसके बावजूद नैतिकए सामाजिकए सांस्कृतिक आदि व्यवस्थाओं में भी परिवर्तन की पूरी जरूरत है जिसको बदले बिना कोई नयी स्त्री का आविर्भाव संभव नहीं है।ष्५

स्त्री के लिए अधिकार और स्वतंत्रता बहुत जरुरी है पर नारीवाद पर इधर तमाम कसमे वादे देखते हुए हिंदी साहित्य जगत की यह कैसी विडंबना है कि शिवरानी देवी और सुभद्रा कुमारी चौहान जैसी अनेक महिलाओं के घर के बाहर निकलने पर सवाल उठाए जाते थे। यह महिलाएं सिर्फ साहित्यकार ही नहीं घर.परिवार और नागरिकता के निजी और सार्वजनिक जीवन से सरोकार रखने वाली एक प्रखर आंदोलनकारी भी थी। अपने छोटे.छोटे बच्चों का मोह त्यागकर आजादी की लड़ाई लड़ती रहीए गिरफ्तार होती रही और रिहा होती रही। स्त्रियों ने साहित्यए संगीत और स्वतंत्रता संग्राम तीनों क्षेत्रों में अपना भरपूर योगदान दिया। उनका उल्लेख भी इतिहास में पूर्ण रुप से दर्ज है। इसे झुठलाया नहीं जा सकता। इसका प्रमाण भी हमें साहित्य और इतिहास में अक्सर मिल ही जाता है। महिला लेखिकाओं ने भी अपने नारीवादी लेखन से महिलाओं के अंदर एक समझ पैदा करने की कोशिश की है। इनके योगदान को साहित्य जगत को नहीं भूलना चाहिए। अतः यह कहा जा सकता है कि.ष्महादेवी वर्माए मृणाल पांडेए मन्नू भंडारीए प्रभा खेतानए कात्यायनी जैसी लेखिकाएँ परंपराओं को धता बताकर आज रचनात्मक चुनौती को स्वीकार कर पायी हैं। अपने स्त्रीवादी विचारों से श्यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताश् वाले भाव की धज्जियां उड़ा दी हैं। नारीवाद भले ही पश्चिम की देन हो पर अपने कथा लेखन से लेखिकाओं ने भारतीय स्त्री को यह बता दिया कि. देवी होने के जिस अभिमान से वह मरी जा रहीं है दरअसल वह उसकी मानवता का आख्यान नहीए मर्दों द्वारा सदियों से बनाया गया ऐसा विचार भर था जिससे कभी पूजकर तो कभी पीटकर अपनी सत्ता कायम रखी थी। लेकिन इस पूज्य भाव से मुक्त होने के पश्चात भी श्लील.अश्लीलए संस्कृति.अपसंस्कृति की सारी परिभाषा स्त्रियों के लिए है।ष्६

प्रायः समाज में पुरुष को सबल और स्त्री को नैसर्गिक रूप से कमजोर माना जाता है। स्त्री की सामर्थ्य और शक्ति पर शक पैदा किया जाता है लेकिन अगर देखा जाए तो घर परिवार में ही रह स्त्री कई घंटो तक काम करती है। खाना बनाने से लेकर परिवार की परवरिश तक कितने घंटे काम करती है६ उसका कोई मोल नहीं होताए न ही उसके बदले में उसे कोई मजदूरी मिलती है। यह बात भी सत्य है कि हमारा समाज प्रतिभावान स्त्रियों की सफलता और सामर्थ्य को सहजता से पचा नहीं पा रहा है। यह पितृसत्तात्मक समाज आज भी स्त्री के आदर्श और कर्तव्यों को परंपरा अनुसार ही तय करता है। भले ही उससे स्त्री के स्वभाव का निषेध और विखंडन क्यों न होता हो। ९स्त्री लंबा सफर९ नाम निबंध में लेखिका ने स्त्री की मुक्ति और बंधन पर सवाल उठाए हैं। ऐसा क्यों है कि स्त्री अपने ही घर के अंदर बंधन महसूस करती है और बाहर निकलने पर वो चैन की सांस लेती है६ स्त्री पुरुष की अर्धांगिनी बनकर हमेशा समाज और मानवता के कल्याण के लिए कार्य करती रही है। यह बात अलग है कि स्त्री को मायाए ठगिनिए दूषितए बेजुबान क्या.क्या नहीं कहा गया लेकिन फिर भी स्त्री ने अपनी संघर्ष का मार्ग स्वयं तय किया और अपने अस्तित्व के लिए अपने को कमतर महसूस नहीं किया।

स्त्री ने पुरुष का सदैव साथ दिया है। वह उसकी सहचरी बन कर रही है। समानता और असमानता का सवाल स्त्री ने कभी नहीं उठाया। वह तो सदैव पुरुष के लिए समर्पित रही है। ऊंच–नीचए सबल. निर्बलए भेद.भाव का दाव.पेच इसी समाज ने गढ़ा है। नारी जीवन के आज भी ऐसे कई प्रश्न है जो विमर्शकारों के लिए चुनौती बने हुए हैं और इनके सवालों का उत्तर देने के लिए कोई तैयार नहीं होता। ये ऐसे मुद्दे हैं जो संवेदना के तह में जाकर मन को कचोटते हैं। स्त्री जीवन का हवाला देते हुए मल्लिका ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि.ष्मैं तो यह मानती हूं कि मर्द की ना तो कोई जाति होती है न संस्कारों से उसका कोई वास्ता। नारी के पास वह होता है.यह दावा तो मैं नहीं करूगीं पर भारतीय संस्कृति को मैं मृतपशु मानती हूं। हर आदमी अपनी स्वार्थ.सिद्धि के लिए उसकी खाल के लिए उसकी खाल नोचकर उसे अपनी तरह से ओढ़ लेता है लेकिन उस खाल के नीचे उसका जो असली रूप छुपा हुआ है वह भी बेहद घिनौना और भोंडा है।ष७

इस प्रकार मृणाल पांडे के निबंधों में स्त्री जीवन के विभिन्न नए–नए मुद्दे दिखाई पढ़ते हैं। यह स्त्री. संवेदनाए स्त्री.चेतनाए और मनोवैज्ञानिकता से जुड़े हुए ऐसे प्रश्नों की पड़ताल करते हैंए जहां स्त्री का संसार विच्छिन्न और विस्मृत दिखाई देता है। इनके निबंध केवल स्त्री जीवन की पड़ताल ही नहीं करते बल्की नारीवाद की चौकाने वाली व्याख्या भी करते हैं। आज का नारीवाद किस ओर बढ़ रहा हैए उसमें कितने नारीवाद के मुद्दे समाहित है और कितनी उसमें बहनापे हैं६ यह भी स्पस्ट रुप से देखने को मिल जाता है। इनके नारीवादी मुद्दे स्त्री.विमर्श की प्राचीन परंपरा को आगे बढ़ाते हैंए और उसमें नयापन समाहित करते हैं। यहां कोरा नारीवाद नहीं है बल्कि आज के समय में घटित समस्याओं एवं मानवीय मूल्यों की नई व्याख्या हैए जो स्त्री की अस्मिता और उसके मूल्यों को स्थापित करते हैं। नारीवाद पर बात करते हुए प्रभा खेतान लिखतीं हैं कि. ष्नारीवाद सत्ता संबंधों के पारंपरिक खयालोंए सरलीकृत व्यवस्थाओं तथा पारंपरिक रुझानों को

चुनौती देते हुए वैश्विक बहनापे का दावा भी पेश करता है। वह विश्वविद्यालयों और बौद्धिक जगत की स्थापित व्यवस्था स्वीकारने से इंकार करता है। बीसवीं सदी में सत्तर और अस्सी के दशक में पश्चिम की नारीवादियों ने पारंपरिक संस्थानों और सामाजिक संरचनाओं का खुलकर विरोध किया था जबकि आज नारीवाद इन संस्थाओं में ही पनप रहा है। उन्हें सत्ता के साथ ही संबंध स्थापित करना पड़ता हैए संस्था के विचारों को अपनाना भी पड़ता है। नारीवादी इसके साथ ही अपनी पहचान भी खोजती रहती है। यदि वे विरोध न करें तो यथास्थिति में फंसकर रह जाएंगी जिसके कारण उनकी वैचारिक धारा अवरुद्ध हो जाएगी।८

सन्दर्भ सूची.रू

१द्ध पाण्डे मृणाल. परिधि पर स्त्रीए;1996द्ध राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्लीए पृष्ठ संख्या 7

२द्ध पाण्डे मृणाल. परिधि पर स्त्रीए;1996द्ध राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्लीए पृष्ठ संख्या 28

३द्ध वर्मा महादेवी. श्रृंखला की कड़ियाँए;2008द्ध लोकभारती प्रकाशन प्रयागराजए पृष्ठ संख्या 83

४द्ध पाण्डे मृणाल. ओ उब्बीरीए;2003द्ध राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्लीए पृष्ठ संख्या 13.14

५द्ध सिमोन द बोउवार. स्त्री उपेक्षिताए;अनुवाद.प्रभा खेतानद्ध पृष्ठ 319

६द्ध यादव लालसा.स्त्री.विमर्श की कहानियाँए;2013द्ध लोकभारती प्रकाशन प्रयागराजए पृष्ठ संख्या 31

७द्ध राजे सुमन. हिन्दी साहित्य का आधा इतिहासए;2011द्ध भारतीय ज्ञानपीठ दिल्लीए पृष्ठ संख्या 307

८द्ध खेतान प्रभा. उपनिवेश में स्त्रीए;2003द्ध राजकमल प्रकाशन दिल्ली एपृष्ठ संख्या 80.81